इष्टदेव सांस्कृत्यायन

प्राण	सब इतिहास हुई
माचिस की डिब्बी डिब्बी में तीली बाहर–भीतर की यह आदत जहरीली सिकुड़ी सी लगतीं है इस घर में आंतें चौखट के बाहर हैं समता की बातें मूल्यों का कैसे निर्वाह करें बोलो अब है उठान कम पर आवक खर्चीली? एक अदद प्राण और छः–छः दीवारें अफनायें अक्सर–हम पर किसे पुकारें? तेजी का झोंका औ मंदी का दौर भर आयीं फिर–फिर से आंखें सपनीली।	उड़ते–उड़ते ये दिन मुंहजली निगोड़ी रातें, पलिहर में ढेलवांस भांजतीं मुलाकातें– सब इतिहास हुईं रात–रात भर धरन ताकना और सोखना आंसू! हर किताब के हर पन्ने में अक्स देखना धांसू! सत्य भूलकर ढोते रहना सपनों की सौगातें– विफल प्रयास हुईं! साथ–साथ ही बुनते रहना कल के ताने–बाने! बाबूजी पर दया और अपने टीचर को ताने! बाहर आते ही अफसर होने की बातें– टूटी आस हुईं।
('नये–पुराने' गीत अंक–3, सितम्बर–1998 से साभार)	सम्पर्क– शिवपुर रोड, गोरक्षनगर सिघड़िया, कूड़ाघर गोरखपुर–273008